गणपति उपासना: उद्विकास

गणपति का उल्लेख वेदों में हुआ है। वहाँ उनका नाम ब्रह्मणस्पति मिलता है। ब्रह्मणस्पति के अनेक मंत्रो में गणपति शब्द विशेष रूप से प्रयुक्त हुआ है। कालांतर में यह संबोधन अधिक प्रचलित हुआ। वेदों में उनके कुछ अन्य नाम भी मिलते हैं। जैसे: महाहस्ति , एकदंत , वक्रतुंड , दंति आदि।

गणपति का अर्थ है गण अर्थात समुदायों का स्वामी। इसी अर्थ के आधार पर उन्हें गणेश भी कहा गया है। विनायक नाम भी उनके लिए इस्तेमाल हुआ है जो विचरण करने वाली आत्माओं के लिए प्रयुक्त होता है।

पुराण काल मे रुद्र शिव के पुत्र गणेश और कार्तिकेय हुए जो क्रमशः गणपति और सेनानी के नाम से विख्यात हुए। गणेश्वरों और विनायकों का उल्लेख महाभारत में देवताओं के साथ हुआ है जो मनुष्यों के कार्य देखते हुए सर्वत्र विद्यमान रहते हैं। उनकी स्तुति में उन्हें अनिष्टों से दूर करने वाला और सभी जगह विद्यमान रहने वाला कहा गया है। पौराणिक आख्यानों के अनुसार गणपति शिव के द्वितीय पुत्र हैं।जो विघ्नों को समाप्त करने के साथ जीवन को मंगलमय करते हैं। इसलिए प्रत्येक शुभ कार्य के आरम्भ में उनकी पूजा आवश्यक मानी गयी है। पूजा निमित्त उनकी मूर्तियां गुप्त काल में बननी प्रारंभ हुईं। जो बाद तक बनती रहीं। जो मूर्तियां हमें मिलती हैं उनमें तीन मुद्रायें प्रमुख हैं: खड़ी(स्थानक), बैठी(आसीन) और नृत्य करती हुई। ऐसी मूर्तियां भारत के विभिन्न क्षेत्रों से मिली हैं।सभी मूर्तियों में गज मस्तक और बड़ा सा उदर चित्रित किया गया है। उनका वाहन मूषक प्रायः उनके साथ उपस्थित रहता है।वैष्णव और शैव सम्प्रदाय की भांति समय के साथ गणपति से जुड़े सम्प्रदाय का प्रचलन हुआ जो गाणपत्य के नाम से जाना गया। गणेश इसके आराध्य थे।

Reference: Jai Shanker Mishra, Social History of Ancient India

गाणपत्य सम्प्रदाय की छह शाखाएं मिलती हैं :

1.महागणपति के आराधक
2.हरिद्रगणपति
3.उचिष्ट गणपति के आराधक
4.नवनीत गणपति
5.स्वर्ण गणपति
6.सन्तान गणपति

1. नवनीत, स्वर्ण और सन्तान सम्प्रदाय के लोग गणपति की मूर्ति की प्रतिष्ठा कर उनकी उपासना करते हैं।

2. महागणपति गणेश को आदिदेव-सृष्टि कर्ता मानते हैं।

3. हरिद्रगणपति उनके मुख और दंत की मुद्रा अपनी बाहों पर तपाये हुए लोहे से अंकित करवाते हैं।पीत वस्त्रधारी, यज्ञोपवीत पहने,चतुरभुज, त्रिनेत्र ,हाथ में पाश, कुश,दंडधारी गणेश की पूजा की जाती है।

4. उचिष्ट गणपति के अराधक तामसी और असत कार्यों के करने वाले होते हैं।ये मदिरा-मास इत्यादि का सेवन करते हैं।

सभी हिंदू परिवारों में आज भी गणेश की पूजा होती है।महाराष्ट्र में गणेश प्रमुख देवता के रूप में पूजे जाते हैं। विद्यारंम्भ श्री गणेश के साथ ही होता है। किवदंती है कि व्यास के बोलने पर महाभारत लेखन का कार्य गणेश ने स्वीकार किया था। किंतु यह भी तय किया था कि महर्षि व्यास धारा प्रवाह बोलेंगे ताकि गणेश को रुकना न पड़े।व्यास ने इसके साथ एक शर्त यह लगा दी कि गणेश बिना अर्थ समझे कोई भी श्लोक नहीं लिखेंगे।जब गणेश श्लोक का अर्थ से समझने लगते तब व्यास को भावों को यथोचित रूप से व्यक्त करने का समय मिल जाता।इससे व्यास को भाव तारतम्य बनाये रखने में सरलता हुई।इस कथा के माध्यम से गणेश के ज्ञान और बुद्धि का परिचय होता है।

Reference: Jai Shanker Mishra, Social History of Ancient India

स्कन्द कार्तिकेय

स्कंद कार्तिकेय शिव-पार्वती के पुत्र थे।रामायण के अनुसार अग्नि ने गंगा का अभिषेक किया था।तदन्तर स्कन्द का जन्म हुआ।गंगा द्वारा भ्रूण को हिमालय पर्वत पर फेंक दिया गया।कृत्तिकाओं ने उनका पालन-पोषण किया। इसलिए वह कार्तिकेय कहलाये। महाभारत में उनकी माता का नाम पार्वती के नाम पर स्वाहा मिलता है।कालांतर में अग्नि को शिव का प्रतिरूप मानते हुए उन्हें शिव का पुत्र माना गया। मयूर उनका वाहन बना जो जंगलों में रहता है।जंगल के स्वामी रूद्र और उनके गण हैं।इसलिए कार्तिकेय का सम्बंध रूद्र से जुड़ा।बाद में वह देवताओं के सेनानायक महासेन बन गए।उनका एक अन्य नाम कुमार भी है।उन्हें विशाख भी कहा गया है। कुषाण शासक हुविष्क के सिक्कों पर स्कन्द,कुमार और विशाख का अंकन मिलता है। पतंजलि का महाभाष्य स्कन्द पूजा का उल्लेख करता है। महाभाष्य का समय दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व माना जाता है। पुराणों से स्कन्द के विषय में विस्तृत सूचना मिलती है।उनके जन्म की कथा भी पुराणों में दर्ज है। ब्रह्म पुराण शिव और पार्वती के संयोग से कार्तिकेय जन्म बताता है। दक्षिण भारत में सुब्रह्मण्यम के नाम से उनकी आराधना की जाती रही है। देवसेना और वल्ली नामक उनकी पत्नियों का भी उल्लेख मिलता है। बनवासी(कर्नाटक)के कदम्ब शासकों और उत्तर भारत की यौधेय जनजाति में कार्तिकेय की उपासना का प्रचलन था।यौधेय सिक्को पर कार्तिकेय का अंकन किया गया है। गुप्त शासक कुमार गुप्त प्रथम के सोने के सिक्कों के पृष्ठ भाग पर भी मयूर पर आरूढ़ कार्तिकेय को देखा जा सकता है।

Reference: Jai Shanker Mishra, Social History of Ancient India